

Men. *Dysc.* 711-747

KNEMΩΝ	<p>οὐκ ἴσως [····]ι κ[·]ι[·]ν οὐδ' ἂν εἷς δύναιτό με          τοῦτο μεταπεῖσαι τις ὑμῶν, ἀλλὰ συγχωρήσετε.          ἔν δ' ἴσως ἡμαρτον ὅστις τῶν ἀπάντων φώμη          αὐτὸς αὐτάρκης τις εἶναι καὶ δεήσεσθ' οὐδενός.          νῦν δ' ἰδὼν ὀξεῖαν οὔσαν ἄσκοπόν τε τοῦ βίου          τὴν τελευτήν, εὔρον οὐκ εὔ τοῦτο γινώσκων τότε.          δεῖ γὰρ εἶναι – καὶ παρεῖναι – τὸν ἐπικουρήσοντ' αἰί.          ἀλλὰ μὰ τὸν Ἥφαιστον – οὔτω σφόδρα &lt;δι&gt;εφθάρμην ἐγὼ          τοὺς βίους ὀρῶν ἐκάστους τοὺς λογισμούς &lt;θ'&gt; ὄν τρόπον          πρὸς τὸ κερδαίνειν ἔχουσιν – οὐδέν' εὔνουν φώμη          ἕτερον ἐτέρῳ τῶν ἀπάντων ἂν γενέσθαι. τοῦτο δὴ          ἐμποδὼν ἦν μοι. μόλις δὲ πείραν εἷς δέδωκε νῦν          Γοργίας, ἔργον ποιήσας ἀνδρὸς εὐγενεστάτου·          τὸν γὰρ οὐκ ἐῶντά &lt;τ' α&gt;ὐτὸν προσιέναι &lt;καὶ&gt; τῇ θύρᾳ          οὐ βοηθήσαντά &lt;τ' α&gt;ὐτῷ πάποτ' εἰς οὐδέν μέρος,          οὐ προσειπόντ', οὐ λαλήσανθ' ἠδέως, σέσωχ' ὄμως.          ὅπερ ἂν ἄλλος καὶ δικαίως· “οὐκ ἔῤ με προσιέναι·          οὐ προσέρχομ'· οὐδέν ἡμῖν γεγονός αὐτὸς χρήσιμος·          οὐδ' ἐγὼ σοὶ νῦν”. τί δ' ἐστί, μειράκιον; ἐάν &lt;τ'&gt; ἐγὼ          ἀποθάνω νῦν – οἶομαι δέ, καὶ κακῶς ἴσως ἔχω –          ἂν τε περι&lt;σωθ&gt;ῶ, ποοῦμαί σ' ὑόν, ἅ τ' ἔχων τυγχάνω          πάντα σαυτοῦ νόμισον εἶναι. τήνδε σοὶ παρεγγυῶ·          ἄνδρα δ' αὐτῇ πόρισον. εἰ γὰρ καὶ σφόδρ' ὑγιαίνοιμ' ἐγὼ,          αὐτὸς οὐ δυνήσομ' εὐρεῖν· οὐ γὰρ ἀρέσει μοί ποτε          οὐδὲ εἷς, ἀλλ' ἐμὲ μὲν, &lt;ἂν ζῶ&gt;, ζῆν ἔῤθ' ὡς βούλομαι,          τᾶλλα πρᾶττ' αὐτὸς παραλαβών. νοῦν ἔχεις σὺν τοῖς θεοῖς,          κηδεμῶν εἰ τῆς ἀδελφῆς εἰκότως. τοῦ κτήματος          ἐπιδίδου &lt;σὺ&gt; προῖκα τοῦμοῦ διαμετρήσας &lt;θ&gt;ἡμισυ,          τὸ δ' ἕτερον λαβῶν διοίκει κάμῃ καὶ τὴν μητέρα.          ἀλλὰ κα]τάκλινόν με, θύγατερ. τῶν δ' ἀναγκαίων λέγειν          πλείον'] οὐκ ἀνδρὸς νομίζω· πλὴν ἐκεῖνό γ' ἴσθι, παῖ –          ὑπὲρ ἐ]μοῦ γὰρ βούλομ' εἰπεῖν ὀλίγα σοὶ καὶ τοῦ τρόπου –          εἰ τοιοῦτ]οι πάντες ἦσαν, οὔτε τὰ δικαστήρια          ἦν ἄν, οὔθ' αὐτοὺς ἀπῆγον εἰς τὰ δεσμοπήρια,          οὔτε πόλεμος ἦν, ἔχων δ' ἂν μέτρι' ἕκαστος ἠγάπα.          ἀλλ' ἴσως ταῦτ' ἐστ' ἀρεστὰ μᾶλλον· οὔτω πράττετε.          ἐκποδὼν ὑμῖν &lt;ὁ&gt; χαλεπὸς δύσκολός τ' ἔσται γέρων.</p>	<p>715</p> <p>720</p> <p>725</p> <p>730</p> <p>735</p> <p>740</p> <p>745</p>
--------	--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	------------------------------------------------------------------------------

Theocr. 17

Ἐκ Διὸς ἀρχώμεσθα καὶ ἐς Δία λήγετε Μοῖσαι,  
 ἀθανάτων τὸν ἄριστον, ἐπὴν † ἀείδωμεν ἀοιδαῖς·  
 ἀνδρῶν δ' αὖ Πτολεμαῖος ἐνὶ πρώτοισι λεγέσθω  
 καὶ πύματος καὶ μέσσοι· ὁ γὰρ προφερέστατος ἀνδρῶν.  
 ἦρωες, τοὶ πρόσθεν ἀφ' ἡμιθέων ἐγένοντο,  
 ῥέξαντες καλὰ ἔργα σοφῶν ἐκύρησαν ἀοιδῶν·  
 αὐτὰρ ἐγὼ Πτολεμαῖον ἐπιστάμενος καλὰ εἰπεῖν  
 ὑμνήσαιμ'· ὕμνοι δὲ καὶ ἀθανάτων γέρας αὐτῶν.

Ἴδαν ἐς πολύδενδρον ἀνήρ ὑλατόμος ἐλθὼν  
 παπταίνει, παρεόντος ἄδην, πόθεν ἄρξεται ἔργου. 10  
 τί πρῶτον καταλέξω; ἐπεὶ πάρα μυρία εἰπεῖν  
 οἷσι θεοὶ τὸν ἄριστον ἐτίμησαν βασιλῆων.  
 ἐκ πατέρων οἷος μὲν ἔην τελέσαι μέγα ἔργον  
 Λαγείδας Πτολεμαῖος, ὅτε φρεσὶν ἐγκατάθοιτο  
 βουλάν, ἂν οὐκ ἄλλος ἀνήρ οἷός τε νοῆσαι. 15  
 τῆνον καὶ μακάρεσσι πατὴρ ὁμότιμον ἔθηκεν  
 ἀθανάτοις, καὶ οἱ χρύσεος θρόνος ἐν Διὸς οἴκῳ  
 δέδμηται· παρὰ δ' αὐτὸν Ἀλέξανδρος φίλα εἰδώς  
 ἐδρίαει, Πέρσαισι βαρὺς θεὸς αἰολομίτρας.  
 ἀντία δ' Ἡρακλῆος ἔδρα κενταυροφόνοιο 20  
 ἴδρυται στερεοῖο τετυγμένα ἐξ ἀδάμαντος·  
 ἔνθα σὺν ἄλλοισιν θαλίας ἔχει Οὐρανίδησι,  
 χαίρων υἰωνῶν περιώσιον υἰωνοῖσιν,  
 ὅττι σφεων Κρονίδης μελέων ἐξείλετο γῆρας,  
 ἀθάνατοι δὲ καλεῦνται ἐοὶ νέποδες γεγαῶτες. 25  
 ἄμφω γὰρ πρόγονός σφιν ὁ καρτερός Ἡρακλείδας,  
 ἀμφοτέρω δ' ἀριθμεῦνται ἐς ἔσχατον Ἡρακλῆα.  
 τῷ καὶ ἐπεὶ δαίτηθεν ἴοι κεκορημένος ἤδη  
 νέκταρος εὐδόμοιο φίλας ἐς δῶμ' ἀλόχοιο,  
 τῷ μὲν τόξον ἔδωκεν ὑπωλένιον τε φαρέτραν, 30  
 τῷ δὲ σιδάρειον σκύταλον κεχαραγμένον ὄζοις·  
 οἷ δ' εἰς ἀμβρόσιον θάλαμον λευκοσφύρου Ἴβας  
 ὄπλα καὶ αὐτὸν ἄγουσι γενειήταν Διὸς υἰόν.  
 οἷα δ' ἐν πινυταῖσι περικλειτὰ Βερενίκα  
 ἔπρεπε θηλυτέρης, ὄφελος μέγα γειναμένοισι. 35  
 τᾶ μὲν Κύπρον ἔχοισα Διώνας πότνια κούρα  
 κόλπον ἐς εὐώδη ῥαδινὰς ἐσεμάξατο χεῖρας·  
 τῷ οὐπω τινὰ φαντὶ ἀδεῖν τόσον ἀνδρὶ γυναικῶν  
 ὅσσον περ Πτολεμαῖος ἔην ἐφίλησεν ἄκοιτιν.  
 ἧ μὰν ἀντεφιλεῖτο πολὺ πλέον. ὧδέ κε παισὶ 40  
 θαρσῆσας σφετέροισιν ἐπιτρέποι οἶκον ἅπαντα,  
 ὀππότε κεν φιλέων βαίνη λέχος ἐς φιλεούσης·  
 ἀστόργου δὲ γυναικὸς ἐπ' ἄλλοτρίῳ νόος αἰεὶ,  
 ῥηίδιοι δὲ γοναί, τέκνα δ' οὐ ποτεικότα πατρί.  
 κάλλει ἀριστεύουσα θεάων πότν' Ἀφροδίτα, 45  
 σοὶ τήνα μεμέλητο· σέθεν δ' ἔνεκεν Βερενίκα  
 εὐειδῆς Ἀχέροντα πολύστονον οὐκ ἐπέρασεν,  
 ἀλλὰ μιν ἀρπάξασα, πάροισ' ἐπὶ νῆα κατελθεῖν  
 κυανέαν καὶ στυγνὸν αἰεὶ πορθμῆα καμόντων,  
 ἐς ναὸν κατέθηκας, ἕως δ' ἀπεδάσσαιο τιμᾶς. 50  
 πᾶσιν δ' ἦπιος ἦδε βροτοῖς μαλακοὺς μὲν ἔρωτας  
 προσπνεῖει, κούφας δὲ διδοῖ ποθέοντι μερίμνας.  
 Ἀργεῖα κυάνοφρυ, σὺ λαοφόνον Διομήδεα  
 μισγομένα Τυδῆι τέκες, Καλυδωνίῳ ἀνδρὶ,  
 ἀλλὰ Θέτις βαθύκολπος ἀκοντιστὰν Ἀχιλῆα 55  
 Διακίδα Πηλῆι· σὲ δ', αἰχμητὰ Πτολεμαῖε,  
 αἰχμητᾶ Πτολεμαίῳ ἀρίζηλος Βερενίκα.  
 καὶ σε Κόως ἀτίταλλε βρέφος νεογιλλὸν ἐόντα,  
 δεξαμένα παρὰ ματρὸς ὅτε πρώταν ἴδες ἁῶ.  
 ἔνθα γὰρ Εἰλείθυιαν ἐβώσατο λυσίζωνον 60

Ἀντιγόνας θυγάτηρ βεβαρημένα ὠδίνεσσιν·  
 ἦ δέ οἱ εὐμενέοισα παρίστατο, κὰδ δ' ἄρα πάντων  
 νωδυνίαν κατέχευε μελῶν· ὃ δὲ πατρὶ εὐκίως  
 παῖς ἀγαπητὸς ἔγεντο. Κόως δ' ὀλόλυξεν ἰδοῖσα,  
 φᾶ δὲ καθαπτομένα βρέφους χεῖρεςσι φίλησιν· 65  
 “ὄλβιε κοῦρε γένοιο, τίοις δέ με τόσσον ὅσον περ  
 Δῆλον ἐτίμησεν κυανάμπυκα Φοῖβος Ἀπόλλων·  
 ἐν δὲ μιᾷ τιμῇ Τρίοπον καταθεῖο κολώναν,  
 ἴσον Δωριέεσσι νέμων γέρας ἐγγὺς ἐοῦσιν·  
 ἴσον καὶ Ῥήναιαν ἄναξ ἐφίλησεν Ἀπόλλων”. 70  
 ὣς ἄρα νᾶσος ἔειπεν· ὃ δ' ὑπόθεν ἔκλαγε φωνᾶ  
 ἔς τρις ἀπὸ νεφέων μέγας αἰετός, αἴσιος ὄρνις.  
 Ζηγός που τόδε σᾶμα· Διὶ Κρονίῳνι μέλοντι  
 αἰδοῖοι βασιλῆες, ὃ δ' ἔξοχος ὄν κε φιλήσῃ  
 γεινόμενον τὰ πρῶτα· πολὺς δέ οἱ ὄλβος ὀπαδεῖ,  
 πολλᾶς δὲ κρατέει γαίας, πολλᾶς δὲ θαλάσσας. 75  
 Μυρία ἄπειροί τε καὶ ἔθνεα μυρία φωτῶν  
 λήιον ἀλδήσκουσιν ὀφελλόμεναι Διὸς ὄμβρω,  
 ἀλλ' οὔτις τόσα φύει ὅσα χθαμαλὰ Αἴγυπτος,  
 Νεῖλος ἀναβλύζων διερὰν ὅτε βώλακα θρύπτει, 80  
 οὐδέ τις ἄστεα τόσσα βροτῶν ἔχει ἔργα δαέντων.  
 τρεῖς μὲν οἱ πολίων ἑκατοντάδες ἐνδέδμηται,  
 τρεῖς δ' ἄρα χιλιάδες τρισσαῖς ἐπὶ μυριάδεσσι,  
 δοιαὶ δὲ τριάδες, μετὰ δὲ σφισιν ἐννεάδες τρεῖς·  
 τῶν πάντων Πτολεμαῖος ἀγῆνωρ ἐμβασιλεύει. 85  
 καὶ μὴν Φοινίκας ἀποτέμενεται Ἀραβίας τε  
 καὶ Συρίας Λιβύας τε κελαινῶν τ' Αἰθιοπῶν·  
 Παμφύλοισί τε πᾶσι καὶ αἰχμηταῖς Κιλικέσσι  
 σαμαίνει, Λυκίοις τε φιλοπτολέμοισί τε Καρσί  
 καὶ νάσοις Κυκλάδεσσι, ἐπεὶ οἱ νᾶες ἄρισται 90  
 πόντον ἐπιπλώοντι, θάλασσα δὲ πᾶσα καὶ αἶα  
 καὶ ποταμοὶ κελάδοντες ἀνάσσονται Πτολεμαίῳ,  
 πολλοὶ δ' ἰππῆες, πολλοὶ δὲ μιν ἀσπιδιῶται  
 χαλκῷ μαρμαίροντι σεσαγμένοι ἀμφαγέρονται.  
 Ὅλβω μὲν πάντας κε καταβρίθιοι βασιλῆας· 95  
 τόσσον ἐπ' ἄμαρ ἕκαστον ἔς ἀφνὸν ἔρχεται οἶκον  
 πάντοθε. λαοὶ δ' ἔργα περιστέλλουσιν ἔκηλοι·  
 οὐ γάρ τις δηίων πολυκῆτα Νεῖλον ὑπερβάς  
 πεζὸς ἐν ἀλλοτρίαισι βοᾶν ἐστάσατο κώμαις,  
 οὐδέ τις αἰγιαλόνδε θαῶς ἐξήλατο ναός 100  
 θωρηχθεὶς ἐπὶ βουσὶν ἀνάρσιος Αἰγυπτίησιν·  
 τοῖος ἀνὴρ πλατέεσσιν ἐνίδρυται πεδίοισι  
 ξανθοκόμας Πτολεμαῖος, ἐπιστάμενος δόρυ πάλλειν,  
 ᾧ ἐπίπαγχν μέλει πατρώια πάντα φυλάσσειν  
 οἷ' ἀγαθῷ βασιλῆϊ, τὰ δὲ κτεατίζεται αὐτός. 105  
 οὐ μὰν ἀχρεῖός γε δόμῳ ἐνὶ πίοι χρυσός  
 μυρμάκων ἄτε πλοῦτος ἀεὶ κέχεται μογεόντων·  
 ἀλλὰ πολὺν μὲν ἔχοντι θεῶν ἐρικυδέες οἴκοι,  
 αἰὲν ἀπαρχομένοιο σὺν ἄλλοισιν γεράεσσι,  
 πολλὸν δ' ἰφθίμοισι δεδῶρηται βασιλεῦσι, 110  
 πολλὸν δὲ πτολίεσσι, πολὺν δ' ἀγαθοῖσιν ἐταίροις.  
 οὐδὲ Διωνύσου τις ἀνὴρ ἱεροὺς κατ' ἀγῶνας

ἴκετ' ἐπιστάμενος λιγυρὰν ἀναμέλψαι ἀοιδάν,  
 ᾗ οὐ δωτίναν ἀντάξιον ὤπασε τέχνας.

Μουσάων δ' ὑποφῆται ἀεῖδοντι Πτολεμαῖον 115  
 ἀντ' εὐεργεσίης. τί δὲ κάλλιον ἀνδρὶ κεν εἶη  
 ὀλβίῳ ἢ κλέος ἐσθλὸν ἐν ἀνθρώποισιν ἀρέσθαι;  
 τοῦτο καὶ Ἀτρεΐδαισι μένει· τὰ δὲ μυρία τῆνα  
 ὄσσα μέγαν Πριάμοιο δόμον κτεάτισσαν ἐλόντες  
 ἄερι πα κέκρυπται, ὅθεν πάλιν οὐκέτι νόστος. 120  
 μοῦνος ὅδε προτέρων τε καὶ ὧν ἔτι θερμὰ κονία  
 στειβομένα καθύπερθε ποδῶν ἐκμάσσεται ἴχνη,  
 ματρὶ φίλα καὶ πατρὶ θυώδεας εἴσατο ναούς·  
 ἐν δ' αὐτοὺς χρυσῶ περικαλλέας ἠδ' ἐλέφαντι  
 ἴδρυται πάντεσσιν ἐπιχθονίοισιν ἀρωγούς. 125  
 πολλὰ δὲ πιανθέντα βοῶν ὄγε μηρία καίει  
 μησὶ περιπλομένοισιν ἐρευθομένων ἐπὶ βωμῶν,  
 αὐτός τ' ἰφθίμα τ' ἄλοχος, τᾶς οὔτις ἀρείων  
 νυμφίον ἐν μεγάροισι γυνὰ περιβάλλετ' ἀγοστῶ,  
 ἐκ θυμοῦ στέργουσα κασίγνητόν τε πόσιν τε. 130  
 ὧδε καὶ ἀθανάτων ἱερὸς γάμος ἐξετελέσθη  
 οὓς τέκετο κρείουσα Ἴρα βασιλῆας Ὀλύμπου·  
 ἐν δὲ λέχος στόρνυσιν ἰαύειν Ζηνὶ καὶ Ἥρῃ  
 χεῖρας φοιβήσασα μύροις ἔτι παρθένος Ἴρις.  
 χαῖρε, ἄναξ Πτολεμαῖε· σέθεν δ' ἐγὼ ἴσα καὶ ἄλλων 135  
 μνάσομαι ἡμιθέων, δοκέω δ' ἔπος οὐκ ἀπόβλητον  
 φθέγγομαι ἐσσομένοις· ἀρετὴν γε μὲν ἐκ Διὸς αἰτεῦ.